माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हायर सेकेण्डरी 2009

केन्द्र क्रमांक की सील

251024

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :–

क :– संख्या शब्दों में ✗ अंकों में ✗

ख :– परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 07 में है।

ग :– उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न–पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक) ____________

नाम ____________ पद ____________

पता / संस्था ____________

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

BSEMP

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड 001 परीक्षा का विषय हिन्दी
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 12/03/09
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
U-2001-C	C

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

9	2	5	1	7	8	2	3

दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को क्रम में शब्दों में लिखा जाए :–

नौ	दो	पाँच	एक	सात	आठ	दो	तीन

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिका चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समा

हस्ताक्षर (परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 91/6077

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

दिनांक.........................

दिनांक.........................

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक / विषय / माध्यम / दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा / रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

प्रश्न - 1 का उत्तर :-

(1) संसार के दुखो से

(2) सुनहरी धान

(3) गणेशशंकर विद्यार्थी

(4) जगन्नाथ दास रत्नाकर

(5) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

प्रश्न - 2 का उत्तर :-

(1) 69

(2) बसंत गीत

(3) अलौकिक सत्ता के प्रति प्रेम

(4) परिवार से मिलने की उत्सुकता पर

(5) आठवें

BSEMP

B S M P

प्रश्न - 3 का उत्तर :-

(1) सत्य

(2) सत्य

(3) सत्य

(4) असत्य

(5) असत्य

प्रश्न - 4 का उत्तर :-

"क"	"ख"
(1) हिन्दी गद्य साहित्य की धरोहर	(ग) निबंध
(2) कान्हा मैं बैरागी हूँगी	(ङ) मीराबाई
(3) सुपर कम्प्यूटर	(घ) नैनो टेक्नोलॉजी
(4) आत्मकथा के क्षेत्र से निकली विधा	(क) संस्मरण
(5) मध्यवर्गीय परिवार की समस्या	(ख) नये मेहमान

5

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 5 के अंक कुल अंक

प्रश्न - 5 का उत्तर

(1) सुमन ने

(2) कारण पर

(3) सरल वाक्य

(4) सज्जन पुरुष की

(5) रामदरश मिश्र

प्रश्न - 6 का उत्तर

कवि शिवमंगल सिंह सुमन के अनुसार विश्व उसके सामने झुकता है। जो उसे झुकाने की सामर्थ्य के साथ निकल पड़ते है। तथा जिसके सामने बड़े-बड़े पहाड़ भी अपना मार्ग छोड़ देते है। तथा उसके मार्ग में विघ्न पैदा नही करते हैं।

तथा जो साहस के साथ बढ़ते हुये संघर्ष के लिए निकल पड़ता है। और उस पर किसी भी प्रकार की बाधा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता वह तो साहस के साथ आगे बढ़ता ही जाता है। और विजय श्री उसके कदमों के नीचे होती है। अर्थात विजय उसी को वरण करती है।

BSFMP

को संसार को अपने कदमों में झुकाने की सामर्थ्य रखते है। संसार उन्हीं के सामने नतमस्तक होता है।

प्रश्न - 7 का उत्तर :-

कवि तिवारी जी ने कहा है। कि एक ही वस्तु किसी को सुन्दर और किसी को कुरूप अर्थात असुन्दर इस कारण लगती है क्योंकि जिसको वह वस्तु सुन्दर प्रतीत होती है। उसकी उस वस्तु के प्रति रूचि है। और उसे वह बहुत सुन्दर लग रही है। किन्तु वही वस्तु यदि किसी को असुन्दर लग रही है। तो उस व्यक्ति की उस वस्तु के प्रति रूचि नहीं है। और वह उसे अच्छी प्रतीत नहीं हो रही है। इसका कारण देखने वाले की रूचि से प्रतीत होता है। कि वह वस्तु कैसी है।

रूचि पर ही निर्भर करता है। कि वह वस्तु उसे अच्छी या बुरी लगे।

रूचि होगी तो उस वस्तु के प्रति हमारा स्नेह बढ़ेगा और उसकी ओर दौर पड़ेगे।

यदि रूचि नही है। तो हम उस वस्तु या व्यक्ति से कुछ लेना-देना नही पड़ता अर्थात कोई मतलब नही होता है।

7

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न - 8 का उत्तर :-

छायावाद जब पूर्णतः समाप्त होने की दशा मे था वहे अंतिम चरण मे था तो उसको पुनः लाने का प्रयास किया गया लेकिन असफलता मिली। और तब से प्रगतिवाद का जन्म हुआ जिस समयकाल मे कवियो ने अपनी स्वतंत्र अनुभूतियो को स्वर देना प्रारम्भ कर दिया तभी से इसका प्रदुर्भाव हुआ। प्रगतिवाद मे मार्क्स के द्वन्द्वात्मक सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ इस क्रम मे शोषित और शोषक जैसे दो वर्ग बन गये थे तो इस कालीन कवियो ने इन शोषक वर्ग की समस्याओ - दुःख - सुखो को अपने काव्य का विषय बनाया और पूँजीपति के खिलाफ आक्रोश दिखाना इसी विशेषता बन गयी थी।

प्रगतिवाद कि विशेषतायें

(1) मानवतावाद की प्रधानता
(2) समाजसुधारवादी काव्य
(3) मजदूरो की शोषण से मुक्ती
(4) नारी की शोषण से मुक्ति।
(5) यथार्थ चित्रण

(1) मानवतावाद :- प्रगतिवादी काव्यो मे मानवतावाद को श्रेष्ठ माना गया तथा ईश्वर आदि को गौण इस प्रकार इसमे ईश्वर के प्रति अनास्था का भाव प्रकट किया गया।

(2) समाजसुधार एवं यथार्थ चित्रण :- प्रगतिवादी कवियो ने समाज मे फैली गरीबी, बेरोजगारी

पृष्ठ के अंकों का योग

आदि समस्या का यथार्थ चित्रण किया।

(3) मजदूरों के शोषण से मुक्ति :- इस काव्य में मजदूरों के शोषण का विरोध किया गया तथा पूँजीवादी शासन सत्ता पर प्रहार किया गया।

(4) नारी शोषण मुक्ति :- इस नवीन काव्य में नारी शोषण मुक्ति पर विशेष ध्यान दिया गया इसमे छायावाद की तरह नारी को उपभोग की वस्तु न मानकर उसे समाज मे प्रतिष्ठित स्थान दिया गया।

प्रश्न - 9 का उत्तर :-

जीवनी :- जीवनी किसी महान व्यक्ति की कथा का किसी दूसरे द्वारा उसका इस तरह वर्णन किया जाता है। जिससे उसका व्यक्तित्व निखर उठे। इसमे तटस्था की आवश्यकता होती है। इसमे जैसा उस व्यक्ति के साथ होता है वैसा ही वर्णन किया जाता है। अतः यथार्थ का चित्रण इसकी प्रमुख विशेषता है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की जीवनी तथा गणेशशंकर विद्यार्थी द्वारा, राहुल का कालेलकर सांकृत्यायन आदि द्वारा लिखित जीवनी इसके उदाहरण है।

BSEMP

9 31 + 4 = 35

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 9 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

SEMP

आत्मकथा :- आत्मकथा मे व्यक्ति पर अपनी कहानी का प्रभाव डाला जाता है। यह स्वयं द्वारा लिखित निबंध की प्रमुख विधा है। इसमे व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण जीवन या अंश को लेकर इस तरह से प्रस्तुत करता है। जिससे उसके प्राचीन घटना तत्वो पर स्वतः प्रकाश पड़ता है। इसमे तटस्थता की आवश्यकता नही होती है। यह काल्पनिक भी हो सकती है।

नेहरू जी की - मेरी कहानी

द्विवेदी जी की - आत्मकथा

आदि जीवनीयो के प्रमुख उदाहरण है।

प्रश्न - 10 का उत्तर

साहित्य मे रामनारायण जी ने स्नेह को अधिक महत्व दिया है। क्योकि धन तो सभी कमा सकते है। किन्तु स्नेह का सृजन केवल साहित्यकार ही कर सकते है। इसलिए वह स्नेह अर्जन करना ही श्रेष्ठ मानते है। जब भी वह कही जाते है। सबसे पहले साहित्यकारो के पास जाकर उनसे मिलने जाते है। तथा उनसे मिलने पर उन्हे परम आनंद की अनुभूति होती है। तथा जिन से इतना व्यक्तिगत मिलना नही हो पाता वे उनसे पत्रो के माध्यम से प्रमाण पोषित करते है। तथा अपने को संतुष्ट करते है। वे मानते है जो आनंद स्नेह मे है वह कही भी नही है।

पृष्ठ के अंकों का योग

BSLMP

इसी प्रकार वे साहित्य मे स्नेह को श्रेष्ठ मानते है। वे कहते है कि जीवन मे भाई का स्थान देने वाली बहन पर अस्पताल मे पड़ा युवक भी जो इनकी रचनाओं को पढ़ने की लालसा रखता है। और बस मे मिलने वाला युवक जो इस बात पर हसता है। कि मै इतनी अच्छा रचना लिख कैसे लेता हूँ जिससे उसकी पत्नी और बेटी दोनो खुश होते है तथा कार्यालय मे काम करने वाला बाबू जो चोरी मे से पैसा बचाकर मेरी रचनाये लेता है। किराये पर साइकिल चलाने वाला लड़का इन सबका स्नेह ही मेरे लिए सब कुछ है। इस प्रकार रामनारायण उपाध्याय साहित्य मे स्नेह को महत्वपूर्ण मानते है।

प्रश्न- 11 का उत्तर

माया का भ्रम ही व्यक्ति को संसार मे मोह बंधन में बांधे रखता है। तथा जब तक व्यक्ति माया या मोह मे फसा रहता है। उसके जीवन मे दुख ही दुख रहता है। वह सदैव निर्बल असहाय बना रहता है।

किन्तु जब व्यक्ति लम्बी साधना से माया के भ्रम को दूर कर देता है।

तब उसमे स्वयं दिव्य आलोक प्रकाशित होने लगता है। वह स्वयं प्रकाशित होने लगता है।

BSEMP

वसुदेव के कथन से यही स्पष्ट होता है कि देवकी के मन से माया का भ्रम दूर गया तथा वह दिव्य अलौकिक हो चुकी है। वह प्रभु के रूप में मग्न हो संसार से विरक्त अपने को निरंजन ज्योतिर्लिंग सर्वस्वरूपा आदि रूपों में देखने लगी है। वह भ्रम से बाहर निकल आयी है।

प्रश्न- 12 का उत्तर :-

दुर्मिल छंद - दुर्मिल सवैया छंद का ही रूप है। इसमें चार वर्ण या चरण तथा 24 वर्ण होते हैं। इसके अन्तर्गत सवैया छंद आता है। इसमें मत्तगयंद, दुर्मिल आदि होते हैं।

उदा० सेस, महेश, गनेश, दिनेश, सुरेसहु निरन्तर ध्यावै
आदि-अनादि अनन्त, अखंड - अभेद-सुवेद बतावै।
नारद से सुक व्यास रटे, पचि हारे तऊ पार ना पावै
ताहि अहिर की छोहरियाँ छछियाँ भर छाछ पै नाच नचावै।

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

(अ) प्रश्न - 13 का उत्तर :-

जो भाषा सम्पूर्ण राष्ट्र मे बोली जाती है। तथा जिसका विस्तार सभी व्यक्तियो मे पाया जाता है। और जिसमे सांस्कृतिक और भावात्मक लगाव का भाव निहित होता है जो भाषा सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता मे बांधने का काम करती है। मानव के पारस्परिक सहज सम्पर्क को बनाती है। वही भाषा राष्ट्र भाषा कहलाती है।

राष्ट्रभाषा की विशेषताये

(1) यह भाषा भावात्मक लगाव उत्पन्न करने वाली होनी चाहिए
(2) इसका विस्तार अधिक होना चाहिए।
(3) सरल सहज होनी चाहिए तभी जो व्यक्ति नही जानते सरलता से सीख सके।
(4) राष्ट्र को एकता के बंधन मे बांधने वाली होनी चाहिए
(5) सभी को इससे लगाव होना चाहिए।

(ब) कक्षा मे संगीता सबसे सुन्दर है। (निषेधात्मक)
उत्तर - कक्षा मे संगीता सबसे सुन्दर नही है।
(स) वर्षा होने पर हम बाहर नही जाते। (मिश्रित वाक्य)
उत्तर - जब वर्षा होती है। हम घर से बाहर नही जाते

प्रश्न - 14 का उत्तर :-

जीवन परिचय

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल -

रचनाएं - निबंधात्मक - चिंतामणि

आलोचनात्मक - त्रिवेणी, रस मीमांसा

साहित्य सेवा :- आपने महान लेखन शैली नियमित तथा अनुभूति की अभिव्यक्ति की तथा आपने पुराने हिन्दी साहित्य ने परम्पराओ, मूल्यों, विश्वासो का नवीनता के साथ परिवर्तन मांगी।

आपने आचंलिक परिवेश मे रमकर काव्य रचना की।

भाषा :- आपकी भाषा शुद्ध परिष्कृत खडी बोली है। आपकी भाषा मे व्यर्थ के आडम्बरो का विरोध किया गया है।

आपने अपनी भाषा के गूढ रहस्यो को समझने के लिए तत्सम - तद्भव शब्दो का सहारा लिया आपने उर्दू - अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत - फारसी अरबी भाषा के शब्दो का भी सहारा लिया जिससे आपकी भाषा मे सहज निखार आ गया। आपने मुहावरे - लोकोक्तियो का भी प्रयोग किया कही-कही तो आपकी भाषा सुक्तिमयी हो गयी।

जैसे - शेष वैरका आधार या मुरत्ता है।

- शैली - सहजता और सरलता आपकी शैली की विशेषता रही है।

आपने अनेक शैलीयो का प्रयोग किया

(1) वर्णात्मक शैली।

(2) भावात्मक शैली।

(3) समीक्षात्मक शैली।

(4) तुलनात्मक शैली।

(1) वर्णात्मकशैली - आपने विषय को समझाने तथा जहाँ किसी वस्तु के बारे मे विस्तृत जानकारि की आवश्यकता होती है।
वहाँ आपने इस शैली का प्रयोग किया।

(2) भावात्मक शैली :- जब आप किसी विषय का गहनता से अध्ययन करते है हृदय आपका भर जाता है। तब इस शैली का प्रयोग करते है।

(3) समीक्षात्मक शैली :- आपने सैद्धान्तिक सैद्धान्तिक और व्यवहारिक विषयो की तुलना मे या समीक्षा मे इस शैली का उपयोग किया है।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(ई) तुलनात्मक :- आपने समीक्षात्मक और मनोवैज्ञानिक निबंधो की समीक्षा मे रस शैली का प्रयोग किया।

साहित्य मे स्थान :- आपने समाज की परम्पराओ मूल्यो और विश्वासो का गहनता से अध्ययन किया अतः आप इनके प्रति जागरुक रहे। तथा आप सदा जीवन उच्च विचार की प्रतिमूर्ति रहे। इस कारण आपने साहित्य क्षेत्र मे अनेक कार्य किये आपका स्थान भी गौरवमय बना हुआ है।

प्रश्न-18 का उत्तर :-

सूरदास :-

रचनाये, सूरसागर, सूरसारावली, साहित्य लहरी,

भावपक्ष :- रस : आपने मुख्यतः श्रृंगार रस को महत्व पूर्ण माना और उसी को काव्य सृजन मे स्थान दिया और वात्सल्य को।

गुण :- मुख्यतः माधुर्य गुण को सबसे प्रभावशाली मानते हुये रचनाये की। अतः आपने माधुर्य का अच्छा वर्णन किया।

(3) सहृदयता और भावुकता :- आपके काव्यों मानव मन को प्रसन्न करने वाली भावुकता मिलती है।

(4) प्रेम सौन्दर्य :- प्रेम सौन्दर्य का वर्णन आपके काव्यों में गहनता से मिलता है। वात्सल्य प्रेम में अधिक।

(5) लोक कल्याण भाव :- आपके काव्यों में लोक कल्याण का भाव विद्यमान है।

(6) जीवन दर्शन :- आपने व्यक्तियों को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

कलापक्ष :- भाषा में आपकी सरलता सहजता ब्रज भाषा रखी। इसमें स्वाभाविकता के भाव पाये जाते है। आपने भावों को पहचानने वाली भाषा का प्रयोग किया।
अपने अनेक शब्दों - उर्दू - अरबी फारसी का भी सहारा लिया।
मुहावरे लोकोक्तियों से भाषा में विशिष्टता आ गयी है।

अलंकार :- आपने अनेक अलंकारों का प्रयोग किया जैसे रूपक उपमा - उत्प्रेक्षा - विरोधाभास आदि।

छंद :- आपने काव्य में छंदों को स्थान दिया जैसे दोहा चौपाई - सवैया आदि।

BSEMP

पृष्ठ के अंको का योग

साहित्य में स्थान :- आपका काव्य भावपक्ष और कलापक्ष दोनो ही दृष्टि से श्रेष्ठ है। आपका काव्य हृदय को शीतलता पहुचाने वाला है। अतः आपका साहित्य जगत में विशेष स्थान है।

प्रश्न - 16 का उत्तर :-

गद्यांश

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के भय नामक पाठ से लिया गया है। इसके रचित आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी है।

~~प्रसंग~~ संदर्भ :- इसमे दुख की सम्भावना मात्र से जो आवेगपूर्ण जड़ता उत्पन्न होती है। उसका वर्णन किया गया है।

व्याख्या :- किसी दुख या आपत्ति के आने की आभासना मात्र अनुमान होने से जो हमारे मन मे आवेगपूर्ण व्याकुलता या जड़ता उत्पन्न होती है या व्याकुलता उत्पन्न होती है वही आशंका कहलाती है। इसमे भय जैसे व्याकुलता तो नहीं होती है और इसका प्रवेश भी धीरे-धीरे होता है। किन्तु यह निकलती अधिक समय बाद है।

BSEMP

प्रश्न- 17 का उत्तर :-

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक के पाठ्य मीरा के पद नामक से लिया गया है। इसकी रचिता मीराबाई जी है।

संदर्भ :- यहाँ पर मीरा ने अपने प्रिय श्री कृष्ण को पाने के लिए अपने मन को उनके चरणों मे लीन रहने के लिए कहा है।

व्याख्या :- मीराबाई कहती है। कि हे मन तु कृष्ण नाम भज जिनके चरण कमलो जैसे है। जिनके गगन के बीच सिंघासन है। मै अपने कदम सोच समझकर रखती हूँ कि मैं कैसे आगे हो तथा कब तीरथ व्रत करो से यदि ईश्वर मिल जाये और तो जिस प्रकार काशी मे मरने से मोक्ष मिल जाये। और यह कहती है कि इस देह को हमे गर्व नहीं करना चाहिए क्योंकि यह तो मिटने वाला है। यह संसार मे एक चौसर की बाजी के समान है जो साम होते ही उठ जाती है। यदि तीरथ करने और गेरुआ वस्त्र धारण करने से तथा घर छोड़ देने से सन्यासी बन जाते है। और फिर भी भगवान को नहीं पा पाते है। तो हमे इस संसार मे दोबारा आना पड़ता है।

इस प्रकार उसी को नाम जपना श्रेष्ठ है जो जन्म जन्मान्तर की फाँसी को काटने वाला है।

प्रश्न - 18 का उत्तर

(क) चरित्र

(ख) मानव जो भी अपने जीवन मे बनता है इसमे व्यक्ति के व्यक्तित्व की प्रधानता सबसे महत्वपूर्ण होती है।
यदि व्यक्ति चरित्र की शक्ति को पा लेता है तो उसका जीवन सफल माना जाने लगता है।
यही चरित्र ही व्यक्ति मे आत्मविश्वास की भावना का और आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करता है
व चरित्र रूपी शक्ति सभी शक्तियों से महान होती है।
यह विल विद्या, बुद्धि सम्पत्ति आदि सभी से श्रेष्ठ मानी जाती है।
जिनके पास चरित्र नही होता उनके पास अपार धन होने के बावजूद भी कुछ नही होता है।
जो व्यक्ति तन - मन से पवित्र और कोमल होता है तथा उसमे कर्तव्य की भावना भरी होती है उसी मे चरित्र का निर्माण होता है। वही श्रेष्ठ चरित्र वाला होता है
मानव जीवन की सार्थकता राष्ट्रीय चरित्र को बनाने मे ही महत्वपूर्ण है।

(ग) चरित्र रूपी शक्ति, विद्या, बुद्धि, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति से महान होती है।

प्रश्न - 19 का उत्तर

आवेदन पत्र,

सेवा में,

श्रीमान सचिव माध्यमिक
शिक्षा मण्डल भोपाल
(म०प्र०) भोपाल

विषय :- अंक सूची की द्वितीय प्रति भेजने के सम्बंध में

महानुभव,

सविनय निवेदन है कि मै कक्षा 10वी की छात्रा हूँ अतः मैने कक्षा 10वी की परीक्षा शासकीय, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मडियादो से दी थी। मैने 2007 मे परीक्षा दी थी मैने कक्षा मे प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण किया था। अतः मेरी असावधानी की वजह से मेरी अंक सूची कही गिर गयी है।

BSEMP

और मुझे कक्षा 11वी मे प्रवेश लेना है।
जो बिना अंकसूची के नही दिया जायेगा।
इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि आप
मुझे मेरी अंकसूची की द्वितीय प्रति भेजने की
कृपा करें। मै आपकी आजीवन आभारी रहूँगी।
धन्यवाद

दिनांक
12/03/09

प्रार्थी
x
क.ख.ग.

प्रश्न- 20 का उत्तर

निबंध

आतंकवाद

(1) प्रस्तावना
(2) अर्थ
(3) आतंकवाद के कारण
(4) (1) विदेशी कूटनीती, (2) सामाजिक समस्या, (3) राजनैतिक
(4) आर्थिक (5) सरकारी विफलताये
(5) आतंकवाद को रोकने के कारण
(6) उपसंहार

ISEMP

योग पूर्व पृष्ठ   पृ० 22 के अंक   कुल अंक

प्रस्तावना :- आज आतंकवाद देश की सबसे बड़ी समस्या बन गयी है। आज भारत जैसे विकासशील देश से लेकर अमेरिका जैसे शक्ति सम्पन्न राष्ट्र को भी आतंकवाद का सामना करना पड रहा है अतः आज आतंक समस्त दुनिया को आतंकित किये हुये है।

अर्थ :- सामान्य आतंकवाद का तात्पर्य मारकाट तथा लूटमारी से लगाया जाता है।
यह सभी हिंसा के कारण है। सामान्यतः विद्वानों के हिंसा के बारे में अलग-अलग मत है लेकिन सभी तरीके से आतंकवाद का तात्पर्य भय पैदा करना, खून खराब करना ही है।
हिंसा से ही आतंकवाद का जन्म होता है।

आतंकवाद के कारण :- आतंकवाद अनेक कारणों से उत्पन्न होता है।
(1) विदेशी कूटनीति :- जो लोग देश की सम्पन्नता में विश्वास नहीं करते है अतः आज पाकिस्तान जिस तरह से साम्प्रदायिक दंगों को तथा धार्मिक धर्मान्धता को बढ़ा रहा है।
यह सबसे बड़ा कारण है।

B S E M P

(2) सामाजिक कारण :- जिन व्यक्तियो को समाज की उपेक्षा का सामना करना पड़ता है वह भी निम्नलिखित व्यवहार की ओर बढ़ जाते है।
आतंकवाद को बढ़ावा मिलता है।

(3) आर्थिक कारण :- बेरोजगारी, गरीबी और निम्न जीवन स्तर भी आतंकवाद को जन्म देता है। जो व्यक्ति इनसे पीड़ित होता है वह किसी भी तरके से धन अर्जित करना चाहता है और इसको सहारा लेता है

(4) राजनीतिक कारण :- राजनीति भी आतंकवाद को बढाने मे कभी पीछे नही है राजनेता आतंकवादीयो को संरक्षण देते है और उनका मनोबल बढाते है।
तथा चुनाव को जीतने मे इनका सहारा लेते है।

सरकार की असफलताये :- सरकारी नीतियो से भी आतंकवाद को बढावा मिलता है जो भी सरकार बनती है वह अनेक ऐसी त्रुटि करती है जिससे इसको बढावा मिलता है।

(24)

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 24 के अंक कुल अंक

रोकने के उपाय :- (1) देश की सीमा पर कड़ी सुरक्षा करनी चाहिए।
(2) आतंकवादियों को संरक्षण देने वालों के खिलाफ भी कार्यवाही।
(3) इनके विरुद्ध कठोर कानून बनाने चाहिए और कड़ाई से पालन करना चाहिए।
(4) सभी को मिलकर इसका विरोध करना चाहिए।
(5) आतंकवाद को बढ़ाने वाले देशों से सम्बन्ध विच्छेद करने चाहिए।

उपसंहार :- सामान्यतः इससे मुक्ति पाने का एक ही तरीका है मिलकर विरोध करना और सभी को मिलकर सामना करना है। और अनेक विदेशों को भी इसके खिलाफ जागरूक होने की आवश्यकता है। जब तक अनेक देश अपने हथियारों को बेचने का बाजार ढूंढेंगे तब तक एक और ओसामा बिन लादेन जन्म लेता रहेगा।

अतः अवश्य है इसके मिटने की यदि हम संगठित हो जाये तो यह तुच्छ सा आतंकवाद हमारा कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा।

भारत में थी जब आग
आतंकियों से मेरे।
वही पत्ते हवा देने लगे
जिन पर तकिया था।